# संत मत-ईश्वर प्राप्ति का सरल मार्ग

मनुष्य जीवन का आदर्श यह है कि वह संसार में रहकर यहाँ के व्यवहारों और कर्तव्यों को धर्मशास्त्र के अनुसार पूरा करते हुए ईश्वर की प्राप्ति कर ले। ईश्वर प्राप्ति के अनेकों रास्ते हैं, परन्तु सबसे सरल साधन सन्तमत में हैं। इसके लिए वक्त के पूरे सच्चे सतगुरू का मिलना अनिवार्य है।

संत मत का तरीका जज्बुल सलूक (भक्त ज्ञानी) का है। प्रेम के वशीभूत होकर गुरू अपनी शक्ति से शिष्य की सुरत को ऊपर खेंच देता है। आत्मा साथ जाती है और ऊँचे स्थान का आनन्द लेती है।

संत मत में लक्ष्य उस आदि शक्ति (एकेश्वर, निराधार, निर्गुण, सबका मालिक परमपिता परमेश्वर) को बांधते है जो सबका आधार है। उस तक पहुँचाने का माध्यम सतगुरू है।

संत मत में अभ्यास के लिए कोई पाबंदी नही है। पूजा के नियत समय एवं स्थान का अनुशासन अच्छा है, किन्तु इसकी कोई बंदिश नहीं है। प्रत्येक व्यक्ति इसके अभ्यास को सब समय तथा सब स्थान पर कर सकता है। शरीर, वस्त्र और स्थान की पवित्रता अनुशासन में आती है, किन्तु मन की पवित्रता मूल है।

संत मत में सुरत-शब्द का अभ्यास कराया जाता है, जिसे "सुरत शब्द योग" कहते हैं। जिन सत्संगियों को शुरू में शब्द सुनाई नहीं देता, उन्हें गुरूमूर्ति का ध्यान करना बता देते हैं। जब शब्द जागृत हो जाता है, तब शब्द सुनने का अभ्यास किया जाता है।

हमारे यहाँ संत मत में माया से लड़ाई नहीं लड़ते, उसका विरोध नहीं करते। माया को माँ का रूप मानकर, उसका सहारा लेकर, उसका आदर करते हुए, उससे बचकर निकल जाते हैं। सारी सृष्टि, प्रकृति की एक-2 वस्तु, सारे ब्रह्माण्ड, माया के चक्कर में नाँच रहे हैं। मनुष्य की आत्मा माया के आवरणों में जकड़ गई है। उसे उन बंधनों से मुक्त कराके अपने असल रूप का दर्शन कराना ही संतमत की शिक्षा है।

संत मत में अभ्यासी जब तक यम-नियम का पालन नहीं करता, तब तक आगे नहीं बढ़ सकता। जो दीक्षा लेकर सतसंग में शमिल होना चाहते हैं उनके लिए यह जरूरी है कि पहले यम-नियम का पालन करें और अपनी रहनी-सहनी ठीक करें।

यम पाँच है- 1. अहिंसा 2. सत्य 3. अस्तेय 4. ब्रह्मचर्य 5. अपरिग्रह

नियम पाँच है- 1. शौच 2. संतोष 3. तप 4. स्वाध्याय 5. ईश्वर प्राणीधान

संत मत में जात-पॉत, धर्म का कोई भेदभाव नहीं होता। ऊँच-नीच, छोटा-बड़ा, किसी भी जाति धर्म का कोई भी व्यक्ति संतमत अपना सकता है।

संत मत में किसी का धर्म, सांसारिक व्यवहार और गृहस्थी नहीं छुड़ाते। छुड़ाते उन बातों को है जो मनुष्य को, ईश्वर से दूर ले जाती है। संत मत में उस आदि शक्ति की उपासना की जाती है जो सम्पूर्ण कलाओं का स्त्रोत है।

संत मत में गुरूकृपा परछांई की तरह सदा साथ रहती है। गुरू अपनी इच्छा-शक्ति से शिष्य को अभ्यास करने में सहायता करते हैं। गुरू अपनी शक्ति और अपना बल देकर वे बातें आपसे छुड़ाते हैं जो परमात्मा की प्राप्ति के रास्ते में बाधक है। गुरू हर समय ईश्वर में लीन रहता है। हर समय ईश्वर से शक्ति लेता है और उस शक्ति का आपको दान देता है। संत मत में जितना तप और अभ्यास है, सब मन और इन्द्रियों को वश में करने का है। सिद्धांत यह है कि आत्मा को मन से न्यारा करके अपने असली प्रीतम परमात्मा में लय कर दिया जाए जो हमारा सच्चा पिता है।

## संत मत में तीन साधन महत्वपूर्ण है :-

1. मनुष्य शरीर में जो अनहद नाद हो रहा है, गुरू से उसका ज्ञान प्राप्त कर शब्द की धार पकड़ो और ऊपर की ओर चढ़ाई करो।
2. गुरूमूर्ति का ध्यान करो (यह केवल उन, साधकों के लिए है जिन्हें यह बताया जाए)
3. जो नाम गुरू ने दिया है उसका हर समय, हर परिस्थिति में सुमिरन करो।

इसके अतिरिक्त प्रेमी भक्तों के लिए सबसे सरल साधन है कि संतगुरू से प्रेम करो और उन पर अपना सब कुछ न्यौछावर कर दो।